**पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित –**

# 45 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर जयपुर में

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला में 45 वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 15 मई से बुधवार, 1 जून 2011 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के आयोजकत्व में श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में ही होना निश्चित हुआ है।

**इस शिविर में मुख्यरूप से धार्मिक अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाईयों को शिक्षण-विधि में प्रशिक्षित किया जायेगा।**

इस अवसर पर समागत विद्वानों के प्रवचनों का लाभ तो प्राप्त होगा ही, साथ में बालकों, प्रौढ़ों और महिलाओं के लिये शिक्षण-कक्षाओं की भी व्यवस्था रहेगी।

आपके यहाँ से कितने व कौन-कौन भाई-बहिन शिविर में पधार रहे हैं, इसकी पूर्व सूचना निम्नांकित पते पर 30 अप्रैल तक अवश्य भेज देवें; ताकि उनके ठहरने एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

**पत्र-व्यवहार का पता –** महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.) फोन - (0141) 2705581, 2707458 फैक्स - 2704127

---

## वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)


| | | |
|---|---|---|
| समाचार पत्र का नाम | : | वीतराग-विज्ञान (हिन्दी) |
| प्रकाशन स्थान | : | श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) |
| प्रकाशन अवधि | : | मासिक |
| प्रकाशक एवं मुद्रक | : | ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। |
| सम्पादक का नाम | : | डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.) |
| स्वामित्व | : | पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 |

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। – प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

# वीतराग-विज्ञान

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।**
**वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 29 (वीर नि. संवत् ह्न 2537) 333 अंक : 9


## हमकौं कछू भय...

**हमकौं कछू भय ना रे, जान लियौ संसार।।**
**जो निगोद में सो ही मुझ में, सो ही मोख मंझार।**
**निश्चय भेद कछू भी नाहीं, भेद गिनै संसार।।**
**हमकौं कछू भय... ।।1 ।।**
**परवश ह्वै आपा विसरि कै, रागदोष कौं धार।**
**जीवतमरत अनादि काल तें, यौं ही है उरझार।।**
**हमकौं कछू भय... ।।2 ।।**
**जाकरि जैसें जाहि समय में, जो होतब जा द्वार।**
**सो बनिहैं टरिहै कछु नाहीं, करि लानों निरधार।।**
**हमकौं कछू भय... ।।3 ।।**
**अगनि जरावै पानी बोबै, बिछुरत मिलत अपार।**
**सो पुद्गल रूपी मैं 'बुधजन', सबकौं जाननहार।।**
**हमकौं कछू भय... ।।4 ।।**

**– कविवर पण्डित बुधजनजी**

छहढाला प्रवचन

# मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

**आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,**
**आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।**
**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,**
**जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो।।१।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

**(गतांक से आगे....)**

**यह छहढाला तो जैनधर्म का तत्त्वज्ञान कराने वाली पाठ्य पुस्तक है, बड़े या छोटे सभी को पढ़ने योग्य है, यह सुगम एवं सभी को समझ में आ जाये - ऐसी है। इसमें प्रयोजनभूत वीतराग-विज्ञान का स्वरूप समझाया है।**

**अहो ! वीतराग-विज्ञान का ऐसा शिक्षण तो प्रत्येक घर में करना चाहिए, इसके अतिरिक्त लौकिक पढ़ाई में तो कुछ भी हित नहीं है। यह तो भगवान सर्वज्ञदेव का पढ़ाया हुआ वीतरागी शिक्षण है, यही शिक्षण सभी जीवों के लिए अपूर्व हितकर है।**

जिनके ज्ञानादि गुणों का पूरा विकास हो चुका है और रागादि दोषों का सर्वथा अभाव हो चुका है - ऐसे सर्वज्ञ वीतराग ही सच्चे देव हैं, जो भेदज्ञान द्वारा ऐसी दशा को साध रहे हैं - ऐसे शुद्धोपयोगी संत सच्चे गुरु हैं और ऐसे देव-गुरु से प्रतिपादित तत्त्व शास्त्र है। सम्यग्दर्शन की भूमिका में ऐसे सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा होती है, सो व्यवहार है; इसके विरुद्ध किसी भी देव-गुरु-शास्त्र की मान्यता व्यवहार में भी नहीं होती। देव-गुरु-शास्त्र का स्वरूप जो विपरीत मानते हैं, उनके तो निश्चय या व्यवहार एक भी सच्चा नहीं होता। सम्यग्दर्शन के सहचररूप से सच्चे देव-गुरु-शास्त्र के आदर का विकल्प होता है, विरुद्ध नहीं होता अर्थात् कुदेवादि की मान्यता का विकल्प नहीं होता। मोक्षमार्ग में निश्चय-व्यवहार की ऐसी ही स्थिति है; परन्तु उसमें मोक्षमार्ग तो शुद्धात्मा के आश्रित जो सम्यग्दर्शनादि हुआ, वह है; उसके साथ का विकल्प मोक्षमार्ग नहीं है। भाई ! मोक्ष का सच्चा कारण क्या है, उसको पहचानो।

एक तो सम्यग्दर्शन की तैयारी वाले जीव को सम्यग्दर्शन होने के पूर्व निश्चय के लक्ष्यसहित जो विकल्प था, उसको सम्यग्दर्शन का कारण कहा, सो व्यवहार है और दूसरे प्रकार में सम्यग्दर्शन के साथ सहचारीरूप से विद्यमान देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा आदि के विकल्प को भी सम्यग्दर्शन कहा, सो व्यवहार है; इन दोनों में विकल्प से पार शुद्धात्मा की दृष्टि ही सच्चा सम्यग्दर्शन है, वही निश्चय है, वही सत्य है, वही मोक्ष का सच्चा कारण है।

वीतरागी देव-गुरु-शास्त्र तो आत्मा का सर्वज्ञस्वभाव सिद्ध करते हैं; सर्वज्ञता और वीतरागता ही उनका तात्पर्य है और वह तात्पर्य निजस्वरूप के श्रद्धा-ज्ञान-आचरण से ही सिद्ध होता है, पर-सन्मुखता से (अर्थात् व्यवहार से) वह सिद्ध नहीं होता। अत: व्यवहार के आश्रय से मोक्षमार्ग मानने वाले लोग वीतराग शासन में नहीं हैं, उन्होंने सच्चे मोक्षमार्ग को नहीं जाना। ऐसे कुदेव-कुगुरु-कुमार्ग की श्रद्धा का विकल्प सम्यग्दर्शन का कारण तो है ही नहीं; वह तो सम्यग्दर्शन का सहकारी भी नहीं होता; वह तो सम्यग्दर्शन से विरुद्ध है। सच्चे देव-गुरु की श्रद्धा का जो विकल्प सम्यग्दर्शन का सहकारी है, वह भी मोक्ष का सत्य कारण नहीं है। सत्य कारण तो भूतार्थस्वभाव के आश्रय से होनेवाली शुद्धात्मा की श्रद्धा ही है; उसे ही 'सत्यार्थ' कहते हैं। निश्चय कहो या सत्यार्थ कहो, वह मुख्य है और दूसरा व्यवहार है, वह गौण है, वह सत्यार्थ नहीं है; परन्तु आरोप है, उपचार है।

आत्मा जैसा सर्वज्ञस्वभावी है, वैसे ही अतीन्द्रिय आनन्दस्वभावी भी है; आत्मा स्वयं ही आनन्दरूप है, राग में उसका आनन्द नहीं है, अत: राग के आश्रय से सुख या आनन्द नहीं होता। उसीप्रकार इस आत्मा का आनन्दस्वभाव कोई देव-गुरु-शास्त्र आदि दूसरों के पास नहीं है; अत: दूसरों के आश्रय से वह प्रगट नहीं होता। जहाँ अपना आनन्द भरा है, उसी में एकता द्वारा आनन्द का अनुभव होता है। अपना आनन्द अपने में ही भरा है, आनन्दरूप स्वयं आप ही है और अपने में दृष्टि करने से उसका अनुभव होता है। ज्ञानस्वभाव आत्मा में है, अत: आत्मा के आश्रय से सर्वज्ञता होती है, उसमें अन्य किसी का आश्रय नहीं है; राग या देह के आश्रय से सर्वज्ञत्व नहीं होता; क्योंकि उसमें वह नहीं है। आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द का पिंड है, उसके आनन्द में अन्य किसी का आश्रय नहीं है; राग या देह के आश्रय से आनन्द नहीं होता; क्योंकि उसमें आनन्द नहीं है। ज्ञान और आनन्द जिसका स्वभाव है, उसके ही आश्रय से वह प्रगट होता है; परन्तु जिसके स्वभाव में ज्ञान और आनन्द नहीं है, उसके आश्रय से वह प्रगट नहीं होता।

मोक्ष अर्थात् पूर्ण आनन्द; उसके कारणरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्र भी अतीन्द्रिय आनन्द के ही अंश हैं, वे आत्मा के आश्रय से होते हैं। आनन्द के समान जातिवाले वे अंश ही पूर्ण आनन्द के कारण होते हैं। राग आनन्द का अंश नहीं है, अत: वह आनन्द का कारण भी नहीं हो सकता; तो उसको मोक्षमार्ग कौन मानेगा ? जिनमें अंशमात्र भी आनन्द नहीं है, अपितु आकुलता है, वे रागादिभाव पूर्ण आनन्दरूप मोक्ष के देने वाले कैसे हो सकते हैं ? निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र आनंदरूप हैं, रागरहित हैं और आत्मा के ही आधीन हैं; वे ही पूर्ण आनन्दरूप मोक्ष के देने वाले हैं। सुखरूप पर्याय पूर्ण सुख को साधती है; परन्तु दु:खपर्याय सुख को नहीं साध सकती। शुभराग द्वारा वीतरागमार्ग नहीं सधता, रागके अभावरूप आंशिक वीतरागता द्वारा ही वीतरागमार्ग सधता है। पुण्य-पाप के राग में आनंद है ही कहाँ ? आनन्द कहो या मोक्ष का मार्ग कहो, उसका कोई भी अंश राग में नहीं है और न आनन्द में राग है; अतएव वे एक-दूसरे के कारण भी नहीं हैं। इसप्रकार राग मोक्षमार्ग नहीं है, व्यवहार के आश्रित मोक्षमार्ग नहीं है; रागरहित शुद्धस्वभाव के आश्रय से मोक्षमार्ग है - यह जैनधर्म का सिद्धान्त है, यह तीर्थंकरों का मार्ग है।

जैनसिद्धान्त का हार्द यह है कि आत्मा स्वयं ज्ञान आनन्दरूप भगवान है, उसको अपने अनुभव में लेना है। ऐसे अनुभव को ही जैनशासन कहा है और वही तीर्थंकरों का मार्ग है। ज्ञान आनन्दस्वरूप में दृष्टि करके एकाग्र होने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र होता है और उसकी पूर्णता होने पर मोक्षदशा होती है। अंश और अंशी एक ही जाति के होते हैं; अंशी का अंश उसी जाति का होता है; सच्चे कारण-कार्य एक जाति के होते हैं; अंश अपनी जाति के अंशी के आश्रय से प्रगट होता है; परन्तु विजाति के आश्रय से नहीं होता। सच्चे ज्ञान का अंश ज्ञान के ही आश्रय से प्रगट होता है, राग के आश्रय से प्रगट नहीं होता। राग के सेवन से तो राग का ही कार्य होगा; परन्तु ज्ञान नहीं होगा। अंशी के साथ एकता करके जो अंश प्रगट हुआ, वही सच्चा अंश है। पूर्णता के लक्ष्य से प्रारंभ ही सच्चा प्रारंभ है। पूर्णता का लक्ष्य या सम्यग्दर्शन ही मोक्षमार्ग का प्रारंभ है। सारा आत्मा आनन्दस्वभावी है, उसके अनुभव से आनन्द ही होता है। राग के आश्रय से आनंद का अनुभव कभी नहीं होता; क्योंकि आनन्द राग का अंश नहीं है। उसीप्रकार ज्ञान और श्रद्धान भी राग के आश्रय से नहीं होते; क्योंकि वे ज्ञानादि राग के अंश नहीं हैं। राग के आश्रय से तो राग होगा, मोक्षमार्ग नहीं होगा। मोक्षमार्ग रागरूप नहीं है।

**(क्रमश:)**

**नियमसार प्रवचन –**

## विभावस्वभावों का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 41वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

**णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।**
**ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।41।।**

**इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।**
**एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं।।41।।**

जीव को क्षायिकभाव के स्थान नहीं हैं, क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं, औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं अथवा उपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

**(गतांक से आगे...)**

**(४) केवलदर्शन :–** आत्मा में परिपूर्ण दृष्टाशक्ति व्यक्त हो जाना और निमित्तरूप से दर्शनावरणी कर्म का सर्वथा क्षय हो जाना केवलदर्शन कहा जाता है। वह सादि-अनन्तकाल रहता है; परन्तु वह भी पर्याय है और पर्याय के लक्ष्य से विचार करने पर राग होता है। इसलिये केवलदर्शन भी धर्म का कारण नहीं है।

**(५) क्षायिकदान :–** शुद्धात्मा के आश्रय से प्रगट होनेवाली निर्मल पर्यायों का आत्मा स्वयं ही स्वयं को दान देता है, वह क्षायिकदान है। वह दानान्तरायकर्म का क्षय करके उत्पन्न होने वाली पर्याय है और अपने परमस्वभाव के अवलम्बन से प्रगट होती है, सादि-अनन्तकाल रहने पर भी वह पर्याय है; अतः आदरणीय नहीं है और धर्म का कारण नहीं है।

**(६) क्षायिकलाभ :–** शुद्धात्मा के आश्रय से आत्मा में आनन्द विशेष प्रगट होता है। उस वीतरागी दशा का स्वयं को लाभ देना क्षायिकलाभ है। वह लाभान्तराय कर्म के नाश से उत्पन्न होता है, सादि-अनन्तकाल रहता है; परन्तु वह पर्याय है, अतः धर्म के लिए आदरणीय नहीं है।

**(७) क्षायिकभोग :–** शुद्धात्मा के आश्रय से आनन्द दशा प्रगट होती है, आत्मा उस आनन्द को भोगता है। वह क्षायिकभोग भोगान्तरायकर्म के नाश से उत्पन्न होता है, सादि-अनन्तकाल रहता है; परन्तु पर्याय होने के कारण धर्म के लिये

आदरणीय नहीं है।

**(८) क्षायिक-उपभोग :-** शुद्धात्मा के आश्रय से वीतरागी सुख विशेष प्रगट होता है, उसे आत्मा बार-बार भोगता है। वह क्षायिक-उपभोग उपभोगान्तरायकर्म के नाश से उत्पन्न होता है, सादि-अनन्तकाल रहता है। किन्तु पर्याय है; अतः वह भी धर्म के लिए आदरणीय नहीं।

**(९) क्षायिकवीर्य :-** शुद्धात्मा के आश्रय से परिपूर्ण वीर्यदशा-आत्मबल प्रगट होता है तथा निमित्तरूप से वीर्यान्तराय कर्म का नाश होता है, उसे क्षायिकवीर्य कहते हैं। वह भी पर्याय है, अतः धर्म के लिए आदरणीय नहीं है।

इसप्रकार क्षायिकभावों के भेद बतलाए; किन्तु वे सब पर्यायें हैं, साधक जीव को प्रगट नहीं है, उनका विचार करने पर राग उत्पन्न होता है; अतः वे धर्म के कारण नहीं हैं।

**क्षायोपशमिकभाव अपूर्ण पर्याय है, इसलिये उसके आश्रय से धर्म नहीं होता।**

क्षायोपशमिकभाव के अठारह भेद इसप्रकार हैं -

**(१) मतिज्ञान :-** मतिज्ञान कथंचित् निर्मलज्ञान है, कथंचित् आवरण वाला है। सम्यग्ज्ञानरूप होने से उसकी स्थिति सादि-सान्त है, नवीन प्रकट होता है और केवलज्ञान होने पर नाश हो जाता है; अतः मतिज्ञान की पर्याय धर्म के लिए आदरणीय नहीं है।

**(२) श्रुतज्ञान :-** श्रुतज्ञान भी सम्यग्ज्ञानरूप होने से सादि-सान्त है और केवलज्ञान होने पर नाश हो जाता है। श्रुतज्ञान से केवलज्ञान अथवा मोक्ष नहीं होता; उसका अभाव होने पर ही केवलज्ञान होता है, अभाव में से भाव आता नहीं। केवलज्ञान अथवा मोक्ष का कारण परमशुद्धस्वभाव है। श्रुतज्ञान की पर्याय धर्म के लिये आदरणीय नहीं है।

**(३) अवधिज्ञान :-** किसी सम्यग्दृष्टि के अवधिज्ञान प्रकट होता है, वह रूपी पदार्थों को जानता है, उसकी स्थिति सादि-सान्त है, केवलज्ञान होने पर नाश हो जाता है। इसलिए अवधिज्ञान मोक्ष का कारण नहीं और आदरणीय भी नहीं है।

**(४) मनःपर्ययज्ञान :-** किसी भावलिंगी मुनि के मनःपर्ययज्ञान प्रकट होता है, वह सामने वाले जीव के रूपीपदार्थों सम्बन्धी विचारों को जान लेता है। उसका भी नाश होने पर केवलज्ञान प्रकट होता है। मनःपर्ययज्ञान पर्याय होने से मोक्ष का कारण नहीं, अतः आदरणीय नहीं।

**(५) कुमतिज्ञान :-** पुण्य से धर्म माने, त्रिकाली शुद्ध स्वरूप भगवान आत्मा से लाभ न माने - ऐसे मिथ्यादृष्टि को कुमतिज्ञान है और वह ज्ञान धर्म के लिए आदरणीय नहीं है।

**(६) कुश्रुतज्ञान :-** मिथ्यादृष्टि के विशेष उत्तरतर्कणारूपी ज्ञान को कुश्रुतज्ञान कहते हैं। जो जीव धर्म प्रकट करे उसके लिए अनादि-सान्त है। वह ज्ञान कुज्ञान है, धर्म के लिए आदरणीय नहीं और धर्म का कारण भी नहीं।

**(७) कुअवधिज्ञान :-** मिथ्यादृष्टि का रूपीपदार्थों को जाननेवाला विभंगज्ञान कुअवधिज्ञान है। वह भी धर्म का कारण नहीं है।

**(८) चक्षुदर्शन (९) अचक्षुदर्शन (१०) अवधिदर्शन :-** सामान्य अवलोकनशक्ति की अधूरी पर्यायें हैं, अतः ये भी धर्म का कारण नहीं हैं।

**(११) काललब्धि :-** इसे क्षयोपशमलब्धि भी कहते हैं। ज्ञानावरणी के क्षयोपशम से उत्पन्न होनेवाले ज्ञान के उघाड़ को काललब्धि कहते हैं। वह पर्याय है, धर्म का कारण नहीं।

**(१२) करणलब्धि :-** सम्यग्दर्शन होते समय अथवा चारित्रदशा होते समय आत्मा में अल्पकालीन शुद्ध परिणाम होता है, उसको करणलब्धि कहते हैं। वह धर्म का कारण नहीं है। जीव अपने शुद्धचैतन्य के आश्रय से सम्यक्त्व अथवा चारित्र प्रकट करता है, तब करणलब्धि से हुई - ऐसा कथन करने में आता है।

**(१३) उपदेशलब्धि :-** इसे देशनालब्धि भी कहते हैं। ज्ञानी पुरुषों के पास से देशना सुनकर विचार करने की शक्ति को देशनालब्धि कहते हैं। यह भी पर्याय है, अतः धर्म का कारण नहीं।

**(१४) उपशमलब्धि :-** इसे विशुद्धलब्धि भी कहते हैं। कषाय की मन्दता के परिणाम होना ही उपशमलब्धि कही जाती है - वह धर्म का कारण नहीं है।

**(१५) प्रायोग्यलब्धि :-** कर्म की स्थिति मात्र अन्तःकोड़ाकोड़ी रह जाने रूप आत्मा की योग्यता को प्रायोग्यलब्धि कहते हैं। इसके आधार से धर्म नहीं होता।

**(१६) वेदकसम्यक्त्व :-** इसे क्षायोपशमिक सम्यक्त्व भी कहते हैं, यह कथंचित् निर्मल तथा कथंचित् विघ्नसहित है। यह मोक्ष का कारण नहीं है।

**(१७) वेदकचारित्र :-** इस चारित्र में कुछ निर्मलता और कुछ मलिनता है। यह भी मोक्ष का कारण नहीं है।

**(१८) संयमासंयम परिणति :-** अन्तरभान होने के बाद अमुक राग टला है और अमुक राग शेष है; वह संयमासंयम दशा - श्रावकदशा कही जाती है; किन्तु वह मोक्ष का कारण नहीं है।

इसप्रकार क्षयोपशमभाव के १८ भेद कहे। ये आंशिक निर्मलता और आंशिक आवरणवाली पर्यायें हैं। इनके आधार से धर्मदशा या मोक्षदशा प्रकट नहीं होती।

**(क्रमशः)**

# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** आत्मा और बन्ध को भिन्न करने का साधन क्या ?

**उत्तर :** आत्मा और बन्ध को भिन्न करने में भगवतीप्रज्ञा ही एक साधन है। राग से भिन्न स्वभावसन्मुख झुकाव करना, एकाग्रता करना, ढलना - यही एक साधन है। राग से भिन्न पड़ने में ज्ञान के अतिरिक्त अन्य कोई साधन है ही नहीं।

**प्रश्न :** आत्मा पर का कुछ नहीं कर सकता, लिख नहीं सकता, बोल नहीं सकता - ऐसा ज्ञानी को बराबर भान है, फिर भी 'मैं लिखूँ, मैं बोलूँ' - ऐसा विकल्प क्यों उठता है ? नभकुसुम तोड़ने का अथवा वन्ध्यापुत्रहनन का भाव ज्ञानी-अज्ञानी किसी को भी नहीं आता; क्योंकि वह असत् है, तब इस अशक्य कार्य का विकल्प क्यों आता है ?

**उत्तर :** ज्ञानी के अन्तर में ज्ञान और राग का भेदज्ञान वर्तता है। उसे तो राग की भी कर्तृत्वबुद्धि नहीं है तो फिर देहादिक्रिया की, लेखनादिक्रिया की कर्तृत्वबुद्धि कैसे हो सकती है ? ज्ञान और राग का भिन्न अनुभव किये बिना 'ज्ञानी का अन्तर क्या कार्य कर रहा है'- उसका ज्ञान अज्ञानी नहीं कर सकता; अत: प्रथम ज्ञानस्वभाव और रागादि को भेदज्ञान द्वारा भिन्न जानना चाहिये। यह जानने के बाद 'ज्ञानी को लेखनादि का विकल्प क्यों उठता है' - यह प्रश्न ही नहीं उठता। ज्ञानी की दृष्टि ही पर और राग के ऊपर से हट गई है, अत: उसे अस्थिरता के अल्पराग में ऐसा जोर ही नहीं आता कि जिससे कर्तृत्वबुद्धि उत्पन्न हो। वास्तव में उसके ऐसी भावना ही नहीं है कि 'मैं करूँ', उसके तो 'मैं जानूँ' - ऐसी ही भावना है। राग का विकल्प तो पराश्रय से उत्पन्न होता है, पराश्रित राग में लिखने आदि के विकल्प उठते तो हैं, परन्तु उसीसमय ज्ञान में ऐसी मान्यता नहीं है कि मैं लिख या बोल सकता हूँ; इससे सिद्ध होता है कि राग आत्मा का स्वभाव नहीं है, ज्ञानी के ज्ञान और विकल्प भिन्न-भिन्न हैं।

**प्रश्न :** इस भेदज्ञान की भावना कब तक करनी चाहिए ?

**उत्तर :** जब तक ज्ञान ज्ञान में ही न ठहर जाय। तब तक अच्छिन्नधारा से भेदज्ञान भाना। पर से भिन्न शुद्धात्मा की भावना करते-करते ज्ञान के ज्ञान में ठहरने पर रागादि से भिन्न होकर सम्यग्ज्ञान प्राप्त होता है। उसके पश्चात् भी पर से भिन्न - ऐसे शुद्धात्मा की सतत् भावना करते-करते केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है; अत: केवलज्ञान होने तक अच्छिन्नधारा से भेदज्ञान की भावना करना चाहिये। इस भेदज्ञान की भावना को रागरूप मत समझना; अपितु शुद्धात्मा के अनुभवरूप समझना।

## समाचार दर्शन -

**लोनावाला स्थित अल्केश दिनेश मोदी आध्यात्मिक कैंपस में -**

# वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

**लोनावाला (महा.) :** यहाँ जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल के अध्यक्ष श्री दिनेशभाई मोदी द्वारा एक आध्यात्मिक कैंपस का निर्माण कराया गया है। इस कैंपस में उन्होंने एक जिनमंदिर का निर्माण भी किया है, इस नवनिर्मित जिनालय में एक ओर शांतिनाथ भगवान की श्वेताम्बर प्रतिमा एवं वेदी के दूसरी ओर आदिनाथ भगवान की दिगम्बर प्रतिमा विराजमान की गई है।

श्री आदिनाथ भगवान का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन दिनाँक 18 से 20 मार्च तक भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

महोत्सव में आदिनाथ भगवान की प्रतिमा सरोजबेन दिनेशभाई मोदी परिवार की ओर से श्री देवश्रीभाई, बाबूभाई, मनसुखभाई और मगनभाई छेड़ा परिवार द्वारा विराजमान की गई।

कार्यक्रम के प्रथम दिन जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई। ध्वजारोहण ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री दिनेशभाई मोदी ने किया। जाप्यस्थापना व इन्द्रप्रतिष्ठा के पश्चात् आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। मंडल पर मंगल कलश श्री बाबूलालजी छेड़ा परिवार की ओर से स्थापित किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन यागमण्डल विधान एवं वेदी शुद्धि हेतु घटयात्रा निकाली गई। अंतिम दिन श्रीजी को वेदी पर अत्यंत भक्ति व उत्साहपूर्वक विराजमान किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली के सहयोग से संपन्न कराये।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व दिनाँक 15 से 17 मार्च तक इसी मंदिर में शांतिनाथ भगवान की श्वेताम्बर प्रतिमा की वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर भी डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव में श्री दिनेशभाई मोदी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी भावना बहुत समय से एक ऐसे मंदिर का निर्माण करने की थी जहाँ दिगम्बर व श्वेताम्बर सभी साधर्मी भाई एकसाथ मिलकर अपनी-अपनी पूजन विधि से धर्माराधना कर सकें और तत्त्वचिंतन का लाभ उठा सकें। आज अपनी भावना को फलीभूत होती देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में इस प्रकार के मंदिरों का निर्माण एक ऐतिहासिक शुरुआत है। भविष्य में इसके अनेक सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। यह कैंपस दिगम्बर व श्वेताम्बर सभी भाईयों के लिये एक मंच पर बैठकर तत्त्वचर्चा करने का एक नया केन्द्र बनेगा, ऐसी मुझे आशा है।

महोत्सव में देवलाली, मुम्बई, पूना आदि अनेक स्थानों से लगभग 500 साधर्मी भाई-बहनों ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई, श्री कमलजी बड़जात्या मुम्बई, श्री शांतिभई शाह मुम्बई, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री नितिनभाई शाह मुम्बई, ब्र. धन्यकुमारजी

बेलोकर गजपंथा, पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्री दिनेशजी शास्त्री लोनावाला, श्री निर्मलजी शास्त्री पूना, श्री श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, श्री प्रवेशजी भारिल्ल करेली आदि महानुभावों के अतिरिक्त देवलाली से ब्रह्मचारी बहनों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

अंतिम दिन शांतियज्ञ के दौरान पण्डित टोडरमल स्मारक को 1 लाख 50 हजार रुपये की दानराशि भी प्राप्त हुयी।

महोत्सव में डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव (गुजराती) एवं मोक्षमार्गप्रकाशक का सार (गुजराती) सभी साधर्मियों को भेंट स्वरूप दी गई।

---

**श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में –**

## विदाई समारोह सम्पन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 1 मार्च 2011 को श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: त्रिमूर्ति जिनमंदिर में जिनेन्द्र पूजन का आयोजन पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री एवं विदुषी श्रुति शास्त्री के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. आनंदजी पुरोहित (प्राचार्य-महाराजा संस्कृत कॉलेज), डॉ. श्रीयांसजी सिंघई (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), डॉ. कमलेशजी जैन (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), डॉ. ओमप्रकाशजी भड़ाना (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित संतोषजी शास्त्री एवं पण्डित तपिशजी शास्त्री मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों ने अपने पाँच वर्षों के अनुभव सुनाते हुये महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया एवं स्वयं को आध्यात्म विद्या पढ़ने का विशेष सौभाग्यशाली विद्यार्थी बताया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को भविष्य को उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा दी।

मङ्गलाचरण प्रफुल्ल शास्त्री ने एवं संचालन आशीष टोंक, अंकित छिन्दवाड़ा, विवेक दिल्ली, रविन्द्र बकस्वाहा, अशोक बकस्वाहा एवं प्रतीति पाटील ने किया।

डॉ. भारिल्ल ने दूसरे दिन अपने पूरे व्याख्यान में धार्मिक अध्ययन को लौकिक अध्ययन से श्रेष्ठ व अतुलनीय सिद्ध किया।

---

**सीमंधर जिनालय एवं त्रिमूर्ति जिनालय के नवीनीकरण का –**

# शिलान्यास समारोह संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 2 मार्च 2011 को सीमंधर जिनालय एवं त्रिमूर्ति जिनालय के नवीनीकरण का शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी सेठी, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री प्रकाशचंदजी सेठी, श्री चेतनजी सेठी, श्री रतनजी सेठी, श्री प्रमोदजी जैन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री प्रकाशचंदजी सेठी ने कहा कि जब से प्रवचन हॉल का नवीनीकरण हुआ है, तभी से हमारे परिवार की भावना जिनालय के नवीनीकरण की भी थी। आज यह योग बना और हमारी भावना साकार हुयी। इसका मुझे विशेष आनंद है।

डॉ. भारिल्ल ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि संस्था के लिए अभी यह स्वर्णकाल आया है और उसकी प्रगति में नित नये आयाम जुड़ रहे हैं।

संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण विवेक जैन दिल्ली ने किया।

समारोह के पूर्व प्रात: 7 बजे से त्रिमूर्ति जिनालय में नित्यनियम पूजन एवं शांतिविधान का आयोजन किया गया। मंगल कलश श्रीमती शशि सेठी परिवार द्वारा विराजमान कराया गया। विधान में महाविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त लगभग 400 साधर्मियों की उपस्थिति रही।

विधान के उपरांत त्रिमूर्ति एवं सीमंधर जिनालय के नवीनीकरण का शिलान्यास श्री प्रकाशचंदजी-शशिजी सेठी परिवार द्वारा किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं महाविद्यालय के छात्रों ने संपन्न कराये।

---

# वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

**सिवनी (म.प्र.) :** यहाँ श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा दिनाँक 14 से 16 फरवरी तक पंच बालयति तीर्थंकर जिनालय का भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर स्वाध्याय भवन का उद्घाटन डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, श्री बसंतभाई एम.दोशी मुम्बई, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित मनोजजी करेली के आतिथ्य में हुआ। जिनमंदिर के शिखर पर कलशारोहण श्रीमती रेखा-राकेश जैन परिवार तथा ध्वजारोहण श्री राजेन्द्रकुमार, किरण, रेशु (इंजी.) रुपम परिवार द्वारा किया गया।

समस्त कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न हुये। विधि-विधान के कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल', पण्डित कांतिकुमारजी एवं पण्डित रमेशजी द्वारा कराये गये।

महोत्सव को सफल बनाने में पण्डित सुबोधजी के मार्गदर्शन में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बालक-बालिकाओं, सम्यक तरंग महिला मंडल सिवनी, भारतीय जैन संघटना सिवनी के साथियों का विशेष सहयोग रहा।

# वेदी प्रतिष्ठा सानंद संपन्न

**घुवारा (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीर दि. जिनमंदिर ट्रस्ट बारव द्वारा निर्मित जिनमंदिर में दिनाँक 6 से 9 मार्च तक वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी के माध्यम से सरल व सुबोध भाषा में मोक्षमार्ग, मोक्षमार्ग का स्वरूप एवं आत्मानुभूति का स्वरूप विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम बांसवाड़ा के निर्देशन में पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित नेमीचंदजी, पण्डित नीलेशजी शास्त्री ध्रुवधाम के सहयोग से संपन्न हुये। पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर व ब्र. नन्हे भैया द्वारा जिनेन्द्र भक्ति आयोजित की गई।

इस अवसर पर श्री अशोककुमारजी रायपुर सौधर्म इन्द्र बने। कलशारोहण श्री अजितकुमार विमलकुमार परिवार ने एवं शिखर पर ध्वजारोहण श्री शीलचंद प्रमोदकुमारजी बारव ने किया। प्रथम दिन ध्वजारोहण श्री वज्रसेनजी दिल्ली द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शाहगढ़, खड़ैरी, बकस्वाहा, सागर, बड़ामलहरा, छतरपुर, भगुवां, रामटोरिया आदि स्थानों से शताधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम डॉ. ममता जैन, बांसवाड़ा द्वारा संपन्न कराये गये।

इस अवसर पर सागर संभागीय जैन जागरण के अग्रदूत स्मरण स्तंभ का अनावरण श्री दशरथजी जैन छतरपुर द्वारा श्री कपूरचंदजी घुवारा, श्री श्रेणिकजी मलैया, श्री महेशजी मलैया सागर व श्री दामोदरजी सेठ शाहगढ़ की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री निर्मलकुमारजी जैन एवं संयोजन श्री चन्द्रभानजी जैन ने किया।

इसी प्रसंग पर वीतराग-विज्ञान पाठशाला का प्रथम वार्षिकोत्सव डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पाठशाला भवन एवं जिनमंदिर का उद्घाटन श्रीमती केशरबाई ध.प.श्री चंद्रभानजी जैन, सुपुत्र श्री अशोककुमार, आलोककुमार, अरविन्दकुमार परिवार द्वारा किया गया।

---

# आध्यात्मिक गोष्ठी संपन्न

**सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) :** यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्दकहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर सिद्धायतन-द्रोणगिरि में दिनाँक 2 से 6 मार्च 2011 तक ब्र.रवीन्द्रजी आत्मन् के सानिध्य में एक आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं दोपहर दो-दो घंटे ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् एवं अन्य विद्वानों द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार की 13वीं गाथा के आधार पर प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। सायंकाल 7.30 से 10 बजे तक प्रतिदिन गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें नय रहस्य, स्वाध्याय, दान, सप्त व्यसन, श्रावक के अष्ट मूलगुण आदि विषयों पर चर्चा की गई।

गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित

राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित सुदीपजी बीना, पण्डित निर्मलकुमारजी सागर एवं पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ़ के वक्तव्यों का लाभ मिला।

गोष्ठी का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण श्री हर्षदभाई मुम्बई द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुम्बई, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश से लगभग 400 मुमुक्षुओं ने लाभ लिया।

देवलाली एवं टीकमगढ़ से लगभग 10 ब्रह्मचारी बहिनों ने भी गोष्ठी का लाभ लिया।

## प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

**कोटा (राज.) :** यहाँ स्थापित आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के चतुर्थ सत्र का शुभारंभ 25 जून 2011 से होने जा रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए. समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। साथ ही छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

महाविद्यालय में छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी 10वीं उत्तीर्ण छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते पर पत्र डालकर या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। महाविद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया 15 मई से 1 जून 2011 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

**संपर्क सूत्र –** पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 9785643203, 8104615220; पण्डित रतन चौधरी, मो. 9828063891, 8104597337

**फार्म मंगाने का पता –** कुंदकुंद कहान छात्रावास, 382, राजीव गांधीनगर, कोटा (राज.)

## प्रवेश फार्म मंगा लेवें

**सोनगढ (गुज.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन विद्यार्थी गृह में द्वितीय सत्र हेतु कक्षा 8 एवं 9 के लिये प्रवेश फार्म आमन्त्रित हैं। प्रवेश फार्म मंगाने हेतु **संपर्क सूत्र :** कामना जैन प्राचार्या, श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन विद्यार्थी गृह, भावनगर-राजकोट हाइवे रोड़, सोनगढ -364250, भावनगर (गुज.), फोन : (02846) 244510

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 17 अप्रैल | अहमदाबाद | दि.जैन महासमिति का सम्मेलन |
| 1 से 5 मई | देवलाली | कानजीस्वामी जयंती |
| 6 मई | चन्देरी | शिलान्यास |
| 10 से 12 मई | मेरठ | वेदी प्रतिष्ठा |
| 15 मई से 1 जून | जयपुर | प्रशिक्षण शिविर |
| 3 जून से 24 जुलाई | विदेश (लंदन-अमेरिका) | धर्मप्रचारार्थ |

# डाक टिकिट भेजकर सत्साहित्य निःशुल्क मँगा लें।

जिनमंदिरों, वाचनालयों, त्यागियों, ब्रह्मचारियों, विद्वानों, स्वाध्याय प्रेमियों के लिये कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा रचित नियमसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल कृत **नियमसार अनुशीलन भाग-2** (पृष्ठ 258, कीमत 20 रुपये) श्री विनोदजी विजयजी जैन दिल्ली की ओर से उनकी माताजी श्रीमती प्रेमवती जैन ध.प. स्व. श्री लक्ष्मीनिवासजी जैन, मैनपुरी के 101वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एवं पण्डित टोडरमलजी कृत रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन **''रहस्य-रहस्यपूर्ण चिट्ठी का''** (पृष्ठ 120, कीमत 10 रुपये) और **''मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार''** (पृष्ठ 408, कीमत 30 रुपये) श्रीमती कंचनदेवी कासलीवाल की स्मृति में कासलीवाल परिवार की ओर से निःशुल्क वितरित किया जा रहा है।

उक्त तीनों प्रतियों को मँगाने हेतु 13/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट अपने पते के साथ निम्न पते पर भेज देवें। ध्यान रहे डाक टिकिट भेजने की अन्तिम तिथि **30 अप्रैल, 2011** है।

**- निःशुल्क साहित्य वितरण विभाग,**
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)

---

**(आगामी कार्यक्रम...)**

# सातवें ग्रुप शिविर का आयोजन

**भिण्ड (म.प्र.) :** श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन एवं श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, भिण्ड तथा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-देवनगर भिण्ड (म.प्र.) के संयुक्त तत्त्वावधान में **दिनांक 2 जून से 10 जून 2011 तक सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर** का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के 111 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। जिसके लिये हमें लगभग 225 विद्वानों की आवश्यकता होगी। अतएव जो महानुभाव बालबोध पाठमाला भाग 1,2,3, वीतराग-विज्ञान पाठमाला 1,2,3 व छहढाला आदि पढ़ा सकते हों, वे हमें मोबाईल नम्बर 09407215571 (डॉ. सुरेश जैन) या 9887457429 (पं. विकास शास्त्री) पर सूचना करने की कृपा करें।

**संपर्क सूत्र :** डॉ. सुरेश जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट देवनगर कॉलोनी, इटावा रोड, भिण्ड (म.प्र.)

---

# आवश्यक सूचना

**वीतराग-विज्ञान के पाठकों को सूचित किया जाता है कि जो भी पाठकगण वीतराग-विज्ञान (मासिक) डाक के स्थान पर ई-मेल द्वारा (पी.डी.एफ. फॉर्मेट) प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपना नाम, ई-मेल एड्रेस व आई. डी. नं ई-मेल द्वारा सूचित करें। ई-मेल द्वारा मंगाने पर वीतराग-विज्ञान तत्काल ही आपके पास पहुँच जाएगी; अत: डाक के स्थान पर ई-मेल द्वारा वीतराग-विज्ञान अवश्य मंगायें। ई-मेल :** ptstjaipur@yahoo.com

## पंचम आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार का आयोजन

**फरीदाबाद-दिल्ली :** यहाँ दिनाँक 23 व 24 अप्रैल को दो दिवसीय आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग का आयोजन किया जाएगा।

इस वर्कशॉप में विभिन्न धार्मिक गेम/एक्टिविटी के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धांतों का भावभासन करने पर जोर दिया जाएगा। इससे अध्यात्म की सिद्धांतपरक बातों को जीवन में उतारने का औचित्य ख्याल में आएगा।

कुछ लोग आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझते ही नहीं और कुछ बुद्धि से समझ तो लेते हैं; परन्तु जीवन का अंग नहीं बनाते; इसलिये जीवन की हर समस्या का समाधान नहीं ढूंढ पाते। आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढ़ना अलग बात है और उनको जीवन में उतारना अलग बात है। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यह भावभासन कराना है कि अध्यात्म वर्तमान में भी हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है। **वर्कशॉप का स्थान – Awesome Farms & Resorts, Taksal, Faridabad-Sohana Road, Faridabad, Delhi-121004**

इसमें 13 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी लोग सम्मिलित हो सकते हैं। इस वर्कशॉप में आने के लिए रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क करें – अंकुर जैन – 9899886637, 9350841701

---

## शोक समाचार

१. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री नगेन्द्रकुमारजी पाटनी की मातुश्री **श्रीमती कंचनबाई पाटनी** का दिनाँक 20 फरवरी 2011 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री स्व.श्री नेमिचंदजी पाटनी की धर्मपत्नी थीं।

**२. सिंगोली-नीमच (म.प्र.) निवासी श्रीमती बरजाबाई** धर्मपत्नी स्व. श्री नानालालजी सा. ठोला का दिनाँक 13 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक मुकेशजी शास्त्री की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

**३. टेलिकुनी-गुलबर्गा (कर्नाटक) निवासी श्री शिवगुण्डप्पा** का दिनाँक 7 फरवरी को 80 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्रीमंत नेज के पिताजी थे।

**४. सोनगढ़ (गुज.) निवासी ब्र. मधुबेन मनसुखलाल जोबालिया** का दिनाँक 8 मार्च को 71 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। आपने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समक्ष ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया था। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000-1000/- की राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

---

### आगामी कार्यक्रम....

श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन जिनमंदिर निडोणि-बीजापुर (कर्नाटक) में दिनाँक 25 से 30 मई 2011 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जायेगा। साथ ही शिक्षण शिविर का भी आयोजन किया जायेगा; अत: सभी साधर्मियों से अनुरोध है कि अत्यधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ लेवें। **– अजित कवटेकर**

## जैन सिद्धांत एवं लब्धिसार-क्षपणासार शिविर

**देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली की ओर से दिनाँक 13 से 17 अप्रैल 2011 तक **जैन सिद्धांत** शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इसमें **पण्डित दिनेशभाई शहा, मुम्बई** प्रतिदिन 6-6 घण्टे जैन सिद्धांतों को समझायेंगे।

दिनाँक 25 से 30 जून तक **लब्धिसार-क्षपणासार शिविर** का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर **विदुषी डॉ.उज्ज्वला शहा मुम्बई** द्वारा **लब्धिसार-क्षपणासार ग्रंथ** के आधार से प्रतिदिन छह-छह घण्टे सरल भाषा में स्वाध्याय कराया जायेगा।

शिविरार्थियों के आवास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था की जा रही है। आपके आने की पूर्व सूचना ट्रस्ट के देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य देवें, ताकि समुचित व्यवस्था हो सके।

**संपर्क सूत्र -**

पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट
173/175, मुंबादेवी रोड़, मुम्बई - 400002
टेलि. - 922/23425241, 23446099

पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट
कहान नगर, लामरोड़, देवलाली-नासिक
422401 (महा.), टेलि. - 95253/2491044

**टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले सभी प्रवचनों को आप निम्न वेबसाईट पर लाईव देख सकते हैं।**
**www.ustream.tv/channel/ptst**

**पाठक कृपया ध्यान देवें**

**वीतराग-विज्ञान का मई का अंक 26 अप्रैल को पोस्ट न होकर मई-जून का 250 पृष्ठीय संयुक्त विशेषांक के रूप में 26 मई 2011 को पोस्ट किया जाएगा।**

## उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के 5 विद्यार्थी राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की ओर से होने वाली खेलकूद प्रतियोगिता हेतु केरल ले जाये गये, जिनमें **विपुल बोरालकर** का बॉलीबाल में नेशनल लेवल पर एवं **अजित कवटेकर** का कबड्डी व बॉलीबाल में नेशनल लेवल पर चयन हुआ। **अजित कवटेकर** को भालाफेंक में रजत पदक भी प्राप्त हुआ।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -**
**वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com**

# डॉ. भारिल्ल का 2011 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 29वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है –

| क्र. | शहर | सम्पर्क-सूत्र | दिनांक |
|---|---|---|---|
| 1. | लन्दन | **Bhimji Bhai Shah 0044-1923826135**<br>**E-mail : bhimji@yahoo.com**<br>**Jayanti Bhai (Gutka) 0044-208 907 8257 (H)**<br>**E-mail :jdgudhka@intraport.co.uk** | 3 से 9 जून |
| 2. | न्यूजर्सी | **Dr. Hemant Shah 001 2017593202**<br>**E-mail : hemantshahmd@aol.com** | 10 से 12 जून |
| 3. | क्लीवलैण्ड | **Kushal Baid 440-339-9519**<br>**E-mail : kushalbaid@att.net** | 13 से 19 जून |
| 4. | शिकागो | **Niranjan Shah (R) 847-330-1088**<br>**E-mail : shahniranjan@hotmail.com**<br>**Bipin Bhayani (O) 815-939-3190**<br>**(R) 815-939-0056** | 20 से 27 जून |
| 5. | ह्यूस्टन | **Bhupesh Seth 281-261-4030**<br>**713-339-3778 (O)** | 28 जून से 3 जुलाई |
| 6. | डलास | **Atul Khara 469-831-2163**<br>**972-424-4902 E-mail : insty@verizon.net** | 4 से 11 जुलाई |
| 7. | सान फ्रांसिस्को | **Ashok Sethi (R) 408-517-0975**<br>**E-mail : ashok_k_sethi@yahoo.com** | 12 से 18 जुलाई |
| 8. | सिंगापुर | **Ashok Patni 006596357834** | 19 से 24 जुलाई |

# पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है –

23 से 27 जून – **सॉनडियागो**, 28 जून से 3 जुलाई – **ह्यूस्टन**, 4 से 11 जुलाई – **मियामी**, 12 से 17 जुलाई – **पिट्सबर्ग**, 18 से 28 जुलाई – **डलास**, 29 जुलाई से 3 अगस्त – **शिकागो**।